रामपन

RAMNESS

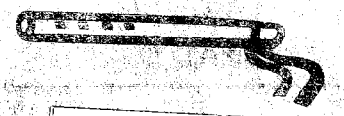

पार्ट-10

प्रस्तुतकर्ता :-

रामराज्य आहवाहन मिशन

Website : www.ramrajyaahwahan.com
E-mail : ram@ramrajyaahwahan.com

प्रमुख कार्यालय :
ए 1, बी 2, पुष्पा अपार्टमेन्ट–III, 44ए, राजेन्द्र नगर,
सैक्टर 5, साहिबाबाद जिला गाजियाबाद (यू0पी0)
फोन नं0 0120–6516399, 09313055063

! ठहरो !

धरती पर, दोबारा से रामराज्य जैसी खुशियां लाने मे हमारा सहयोग करे।

रामराज्य आह्वाहन मिशन

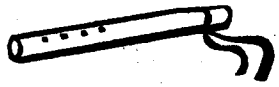

वैबसाईट देखें :
www.ramrajyaahwahan.com

नोट : आप भी राम हो सकते हैं, आप कहीं न कहीं के राजा हैं, आप किसी न किसी बात के धनी हैं, आप अपने परिवार या अपने व्यापार के राजा ही तो हैं, भगवान ने हर एक को बनाया हैं। अपना राज्य तथा अपना धन पहचानें और अपने राज्य को रामराज्य जैसा बनाकर, इस दुनिया में रामराज्य लाने में हमारा सहयोग करें।

मिशन को जानने के लिए सम्पर्क करें।

A1&B2, पुष्पा अपार्टमैंट–III, 44A, राजेन्द्र नगर, सैक्टर 5, साहिबाबाद, जिला गाजियाबाद
फोन नं0 : 0120–6516399, 9313055063
E-mail : ram@ramrajyaahwahan.com

"मिशन सोचता है कि परिवार एक राज्य ही तो है, व्यापार एक राज्य ही तो है इसका मुखिया एक राजा ही तो है। हर राजा अपने राज्य को ऐसे क्यों नहीं चलाता जैसे राम जी अपना राज्य चलाया करते थे जब आप ऐसा चाहने लगेंगे, तो आप राम जी की तरह राज्य करना सीख भी जाऐंगे ही एवं जब आप राम जी की तरह राज्य करना सीख जाऐंगे तो रामराज्य ही करेंगे और क्या करेंगे। आपको भी आनन्द आ जाएगा आपके परिवार को भी आनन्द आ जाएगा और फिर धीरे धीरे रामराज्य ही होगा आप शुरु करें तथा अपने राज्य में रामराज्य बनाऐं।"

लोग (कट्टर मजहबी) कहते हैं कि जब राम की बातें कर रहे हो तो अल्लाह की क्यों, यीशु की क्यों? मेरा कहना निम्न है:–

1. मैं, मेरा मिशन, अल्लाह एवं ईसा मसीह का भी आर्शीवाद मांग रहा है बात साथ ना साथ की नहीं है मैं तो चाहता हूँ कि चूंकि मेरा काम एक नेक काम है तो मुझे क्यों न सभी आर्शीवाद दें, दुआ दें, कृपा दें।
2. भारत एक प्रजातन्त्र देश है न कि धर्म निरपेक्ष यहां तो सभी धर्म रहते हैं बिना मजहब व धर्म को ध्यान रखे सभी सिर्फ भारतवासी है कोई भी भारतवासी क्यों न अच्छा हो, प्यारा सा हो, श्री राम के जैसा प्यारा हो। जब भगवान ने इन्हें भी भारत में इस दुनिया में रहने का अधिकार दिया है तो इन्हें हमारे मिशन से भी जुड़ने का पूरा अधिकार है।
3. भारत एक देवराष्ट्र है, देवभूमि है, भगवान का राष्ट्र है तथा राम भगवान परमात्मा तो सभी में बसते हैं सभी का लालन-पालन करते हैं तो हम भगवान के बनाये हुए नियमों एवं नीतियों से अर्थात इन्सानियत, मानवता, प्रेम, सौहाद्रता से बाहर कैसे जा सकते हैं।
4. श्री राम जी के राज्य रामराज्य में भी तो सभी थे उन्होंने तो सभी को अपनाया विभीषण को भी जो

राक्षस जाति के थे सुग्रीव आदि वानर जाति भालू आदि हिंसक पशु भी अर्थात वे जीव भी जो पशु के समान थे एवं सभी को सुखी किया उन्होने भेदभाव नहीं किया। सभी को राम जैसा सुन्दर मन का बनाया सभी के मनों को जीता सभी के एक छत्र सम्राट बनें ताकि उन सबके जीवन भी सुखी हो सकें। वे भी अगर किसी और राजा की छत्रछाया मे होंगे तो उनका जीवन दुखमय हो सकता है ताकि उनके जीवन के भी दुख दूर हो जायें वे भी सुखी हों तभी उनको भी अपनी छत्र छाया मे लिया यही तो सच्चा भगवानपन, रामपन, परमात्मा है वरना तो उनको भेदभाव वाला न कहा जाएगा वे कहां समभाव वाले देव रह पाऐंगे कहला पाऐंगे।

हाँ सभी दुराचारी श्री राम के कोप के भागी है तथा सभी नेक लोग श्री राम की कृपा के अधिकारी। अब वे चाहें श्री राम के अपने लोग हों या हो पराऐ लोग यही उनका समभाव है तभी राम है भगवानों के भी भगवान है।

5. आप सब भी तो आपस मे बैठते हैं वार्ता करते हैं एक दूसरे को अपनी अपनी बात मनवाना चाहते हैं अर्थात अगर मान जाऐंगे तो शान्ति से साथ में रहने को तैयार हैं अतः शान्ति एवं अच्छी नीयत ही महत्वपूर्ण है बाकी सब नहीं तो हमे ही क्यों मजबूर

किया जाए कि हम उनके साथ न बैठें, उनके मन सुन्दर बनाने का प्रयास न करें, इससे ऐसा लगता है यह आपका हमारे पर अन्याय अर्थात अपनों का अपनों पर अन्याय कहलाएगा हमें अपना बनाकर अपनाकर खुश होयें कि भगवान ने हमें भी बनाया।

6. आप का हमारा एक ही तो काम है आप दुराचार का दुराचारियों का, दूसरों को आपने दुराचारी पाया है उन का दमन करते हैं तथा रामराज्य फैलाते हैं राम जी का राज्य फैलाते हैं। हम भी राम राज्य फैलाते हैं तथा सभी को श्री राम जी के राज्य के अर्न्तगत लाने का प्रयास करते हैं अगर हम प्रजा का ख्याल रखेंगे तभी तो प्रजा हमारे छत्र के नीचे आएगी अन्यथा क्यों आयेगी। एवं अगर हम दूसरों को छोड़ देंगे अपने छत्र के साथ नहीं लाऐंगे तो प्रभु श्री राम चक्रवर्ती सम्राट कैसे होंगे पृथ्वी पर काफी सारे तो दूसरे भी हैं श्री राम का छत्र छोटा न करें, इससे श्री राम का अपमान होगा इससे ऐसा सिद्ध हो जाएगा कि कुछ लोग है जो श्रीराम के छत्र के साथ आने को तैयार नहीं हैं। कुछ लोग हैं जिन्हें श्री राम राम नहीं बना पा रहे हैं उनके जीवन को सुखी नहीं कर पा रहे हैं प्रभु श्री राम को चक्रवर्ती सम्राट बनाऐं, पृथ्वी पर समूची पृथ्वी पर उनका रामराज्य बनवाऐं ताकि उनका

मान बढ़े उनकी नीतियों का, उनके नियमों का, उनकी शरणागत प्रेम वत्सलता, उनके अपनेपन का मान बढ़े। सारी एवं समूची पृथ्वी सुखी एवं समृद्ध हो सके आधी अधूरी नहीं।

7. जब हम भारतवासी देवराष्ट्र के वासी हैं श्री राम के राज्य के कार्यकर्ता हैं, रामराज्य के मंत्री, प्रजा हैं तो सिर्फ श्रीराम की नीतियों एवं नियम ही बनाऐं उनका ही पालन करें एवं करवाऐं सब राजा अपनी अपनी अलग नीतियां एंव नियम न बनाऐं वरना तो सिद्ध होता है कि हम श्री राम का अपने पर शासन स्वीकार नहीं कर रहे हैं हम अपने राजा से बगावत कर रहे हैं उनके सिद्धान्तों नीतियों व नियमों को न मानकर उनके बगावती कार्यकर्ता कहलाऐंगे एवं समय आने पर श्री राम के कोप के भागी बनेंगे एंव पछताऐंगे।

   सभी जानते हैं कि श्री राम शरणागत वत्सल हैं जो भी उनकी शरण में आता है सभी को अपनाते हैं एवं अच्छा बनाते हैं उसको उचित राह दिखाकर उसके दुखों को यथा सम्भव दूर करते हैं वे बस देखते हैं बस अच्छे मन का होना चाहिए अच्छे स्वभाव का होना चाहिए जो सन्त स्वभाव का नहीं होता वह स्वयं ही उनके पास नहीं आता है और अगर उनके पास आने के बाद भी अगर गन्दे मन

का रहता है तो इस पाप का दण्ड पाता है वे अपने नीति एवं नियमो में दृढ़ हैं एवं निर्बल-दीन-दुखियों के हमेशा हितकारी हैं।

8. आप सब भी तो सब के साथ बैठते हैं वार्ता करते हैं एवं चाहते है कि अगर वे तुम्हारी बात मान जाऐगे तो आप उनको अपने साथ शान्ति से बैठने देने के लिए तैयार है अर्थात बस दुराचारी एवं दुराचारों से विरोध रखते है मात्र गैर हिन्दुओं से नहीं क्योंकि अगर ऐसा होता तो आप उनके साथ बैठते ही नहीं, वार्ता ही नहीं करते उनको सिर्फ मुंह मोड़ते उनको अपनी शर्तों पर भी अपने यहां रहने, अपने साथ बैठने, उन्हें भी अपना बना लेने को तैयार नहीं हो जाते अर्थात अगर वो श्री राम जैसा अपनापन श्रीराम जैसा समभाव रखे तो आप भी सबको अपनाने को तैयार हैं।

9. जब आप कोई दुकान खोलते हैं कोई व्यापार खोलते हैं तो क्या कोई देखता है कि ग्राहक हिन्दु है या गैर हिन्दु। बस उन्हें तो ग्राहक से मतलब है कोई भी हो वे अपना सामान बेचते हैं अतः यहां भी यही है मिशन भी तो एक दुकान ही है जो रामभाव देता है वह ग्राहक की जाति क्यों देखे।

10. ठीक इस ही तरह राजनीति को देखें जब कोई नेता चुनाव लड़ता है तो क्या वह देखता है कि वोटर

कौन है वह तो बस सभी को वोट देने के लिए प्रेरित करता है तथा किसी भी मजहब से ज्यादा से ज्यादा वोट लेने की कोशिश करता है तथा जो भी ज्यादा से ज्यादा वोट देता है उस ही की ज्यादा से ज्यादा मदद उसकी जरुरतों को पूरा करने की कोशिशें करता है तो हमें ही क्यों मजबूर किया जाए हम को ही क्यों घटाया जाए आदि।

तो हमें ही क्यों मना करते हैं हम भी तो यही कर रहे हैं प्रेम सौहार्द्रता श्री राम के नियम उनके भाव ही समझा रहे हैं जिनको यह सब अच्छे लग रहे हैं जो समझ पा रहे हैं उनको अपना रहे हैं तथा जो समझ नहीं पा रहे हैं उनको भगवान से, उनके भगवान से भी प्रार्थना कर रहे हैं कि उनकी भी समझ मे आ जाए ताकि उनका सच्चा हित हो सके एवं समूची पृथ्वी पर रामराज्य हो सके। क्यों सिर्फ हिन्दुओं में ही रामराज्य होना चाहिए यह संकुचित है, यह राम भाव नहीं है।

जब हम ऐसा सोचेंगे सिर्फ तभी श्री राम समूची पृथ्वी पर रामराज्य बना पाऐंगे। हम कम से कम आप तो क्योंकि आप तो हमारे हो रामराज्य फैलाने में सभी में फैलावाने में हमारा साथ दें रामराज्य को छोटा न करें आपस में अर्थात हम ही से न लड़ें श्री राम के भाव उनकी नीतियों एवं राज्य के नियमों को समझें।

श्री राम के राज्य में प्रेम से रहना आवश्यक है, आपस में न लड़ना आवश्यक है, प्रेम व सौहार्द्रता का रहना आवश्यक है, मनों को जीतना जरुरी है न कि शरीर को जीतना, मनों में राम बसाना जरुरी है, हम आशा करते हैं कि सभी श्री राम को समूची पृथ्वी का एक छत्र सम्राट बनाने का प्रयास करेंगे तथा कोई भेदभाव नहीं रखेंगे एवं हर किसी को राम बनाऐंगे ताकि वह अपने राज्य को रामराज्य जैसा बना सके तथा सभी लोग सुखी हों एवं किसी का मन भी आहत महसूस न करे।

जय श्री राम

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

जब राम जी ने रावण का वध कर दिया तथा सीता जी वापस आयीं तो श्री राम जी ने सीता जी की अग्नि परीक्षा ली थी मैं इसको सोच-सोच कर बहुत दुखी होता था कि श्री राम जी जो इतने शरणागत वत्सल हैं इतने दयालु, खुली मानसिकता वाले तथा एक बार जिसे अपना लेते हैं उसे फिर कभी पराया नहीं करते वो ऐसे कठोर कैसे होंगे कि उन्होंने अपनी पत्नी को जीते जी अग्नि के हवाले कर दिया। आज तमाम पढ़ने पढ़ाने के पश्चात, तमाम विचार करने के पश्चात, मैंने ऐसा पाया और मुझे लगता है कि हां यही सत्य है।

श्री राम अत्यन्त शुद्ध एवं पवित्र थे एवं कुछ भी अपवित्र या अशुद्ध या झूठा ग्रहण न करते थे न कर सकते थे तथा धोखे से भी ग्रहण नहीं हो सकता था तथा उनकी शुद्धता एवं पवित्रता का स्तर इतना ऊँचा था कि शरीर तो शरीर बल्कि मन तक की पवित्रता एवं शुद्धता तक जाता, मन तक भी अपवित्र एंव अशुद्ध एवं झूठा नहीं होना चाहिए। यही थी वजह तथा अग्नि ही ऐसी है जो अशुद्ध को शुद्ध करती है। जब कोई आग में तप जाता है तो शुद्ध हो जाता है अतः सीता जी जो इतने लम्बे समय रावण जैसे शक्तिशाली राक्षस के यहाँ अपहृत स्थिति में रहीं तब यह तय करना मुश्किल हो गया है कि सीता जी पवित्र एवं शुद्ध है या नहीं या उनका मन पवित्र एवं शुद्ध है या नहीं तो समझदारी से बिना किसी दबाव के श्रीराम जी ने विचार किया एवं तय किया क्योंकि श्रीराम जैसा पुरुष एवं पत्नी की तरफ पूर्णतः कर्तव्यनिष्ठ एंव अच्छा स्वामी तो जरुर रहेगा मगर अपनी पवित्रता एवं अपनी शुद्धता से समझौता नहीं करेगा एवं अगर उसकी पत्नी या उसकी पत्नी का मन अशुद्ध हो गया है तो बिना किसी हिचक के एक दम बे हिचक त्याग देगा। इस ही वजह से श्री राम ने यह तय किया कि सीता जी को अग्नि परीक्षा देनी चाहिए क्योंकि अगर वह अशुद्ध हो गयी हैं तो भस्म हो जाऐंगी एवं उनकी दुर्गति भी नहीं होगी एवं श्री राम को तो अशुद्ध को त्यागना ही है एवं अगर अग्नि से जीवित

बचती हैं तो स्वाभाविक है अशुद्धता जलकर भस्म हो गयी एवं सीता जी पूर्णतः पवित्र हो गयीं तथा उन्हें अपनाने में कोई दोष नहीं होगा तथा शायद उनके काल के अनुसार, समयानुसार एक बहुत ही सोचा समझा हुआ एवं सुलझा हुआ समाधान था क्योंकि यह वह समय था जब मन तक कि पवित्रता का ध्यान रखा जाता था।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

श्री राम के बनवास के समय में जो सूर्पणखा वाली बात है जब सूर्पणखा राम जी कभी लक्ष्मण जी की तरफ गयी और लक्ष्मण जी ने सूर्पणखा के नाक कान काट दिये मुझे बहुत दुख होता था कि श्रीराम जी जैसा महापुरुष ऐसा क्यों करेगा एक स्त्री से खिलवाड़ क्यों करेगा आज तमाम मन्थन के बाद जो मेरी समझ में आता है वह निम्नलिखित है एवं शायद यही सत्य है यही सत्य है।

सूर्पणखा वन में श्री राम के पास एक बड़ी रुपसी का भेष बनाकर आयी थी। श्री राम तो सपत्नीक वनवास में थे मगर लक्ष्मण की यहां पत्नी नहीं थी वे अकेले थे अपने भाई भाभी की सेवा करते थे अब श्री राम तो शरणागतवत्सल है एवं अपने सेवकों का खुद ही बहुत ख्याल रखते हैं तथा अपने सेवकों की चिन्ता रखते हैं अतः जब उन्होंने देखा कि कोई रुपसी उपलब्ध है तथा

विवाह चाहती है एवं विवाह करने लायक भी है अपने परिवार में ला सकने लायक भी है तो क्यों न लक्ष्मण शादी कर लें ताकि कोई उसका भी ध्यान रखे यही वजह थी कि उन्होंने कहा तुम लक्ष्मण से कर लो उसे तैयार कर लो मगर दूसरी तरफ लक्ष्मण तो सच्चे सेवक थे उन्हें अपनी सेवा चाहिए ही नहीं थी इन्हें अच्छा बड़ा सेवक बनना था उन्हें अपनी किसी भी सेवा की जरुरत नहीं थी वे तो बस सेवा करते थे अतः श्री राम की तरफ भेज देते थे नहीं भैया मुझे नहीं करनी वे तो तपस्वी थे तथा मानते थे कि यह सब सेवा कराना पत्नियां रखना आदि तो बस श्री राम अर्थात स्वामी को ही सुहाता है उन्हें नहीं। यही थी वजह स्वामी सेवक को सुख देना चाह रहा था एव सेवक सिर्फ अपने स्वामी को सुख देना चाह रहा था। यही वजह थी फिर परेशान होकर सूर्पणखा अपने असली राक्षसी रुप में आ गयी तथा भय दिखाने लगी इस बात पर राम जी को गुस्सा आ गया कि एक स्त्री जिसको कोई लाज ही नहीं है हम इतना मना कर रहे हैं तथा एक दूसरे की तरफ भेज रहे हैं इतना तिरस्कार कर रहे हैं फिर भी बैचेन है हममें से किसी को भी पाने के लिए। इसकी कोई इज्जत है ही नहीं इसकी जरा सी भी नाक ही नहीं है इसकी नाक कान काट दो इस बेईज्जत नारी की यही दुर्दशा होनी चाहिए तथा उसको उन्होंने उसके कर्मानुसार सजा दी तथा श्रीराम जैसे श्रेष्ठ पुरुष

को यही शोभा देता है चाहें उसका कुछ भी परिणाम हो। मुझे अपने श्री राम पर गर्व है कि वह अत्यन्त पवित्र, शुद्ध एवं न्यायप्रिय तथा सेवकों के सच्चे स्वामी निर्भीक एवं निडर हैं तथा निडरता पूर्वक न्याय करते हैं।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

हमारा समाज क्या है यह है बस बहुत सारे इन्सानों का समूह जो पुरुषों से शासित होता है। अब दुनिया का यही सर्वोत्तम रुप है कि समाज अत्यन्त सुन्दर अच्छा प्यारा सा एवं सराहनीय हो जिसकी इन्सान तो इन्सान भगवान भी सराहना करें। अब यह सब कैसे हो सकता है जब इस समाज के पुरुष अच्छे सुन्दर, प्यारे से एवं सराहनीय मन के हो जाऐं। अब यह समस्या होती है कौन एवं कैसा मन अच्छा, सुन्दर, प्यारा सा एवं सराहनीय मन है। जब हम यह खोजते हैं तो हमें राम याद आते हैं मर्यादा पुरुषोतम अर्थात पुरुषों में उत्तम। जब राम को पाते हैं तो फिर देखते हैं कि इनमें ऐसा क्या था कि इन्हें पुरुषोत्तम कहा जाता है अर्थात अगर इन वाले गुण हममें भी आ जाऐं तो हम भी उत्तम पुरुष बन सकते हैं अर्थात राम का मनन राम का अध्ययन जो हम कर रहे हैं वह हम अपने को एक उत्तम

पुरुष सुन्दर सा, प्यारा सा, अच्छा सा एवं सराहनीय बनाने के लिए कर रहे हैं अतः हमने उनके उन गुणों को पकड़ना है जिन्होंने उन्हें उत्तमता का दर्जा दिया है।

जब मैं मनन करता हूँ विश्लेषण करता हूँ तो पाता हूँ कि श्री राम में एक खास विशेष बात थी जो ज्यादातर कहीं और नहीं पायी जाती है और भगवानों में भी नहीं पायी जाती है तभी सबने उन्हें परमात्माओं का भी परमात्मा ईश्वर का भी ईश्वर मान लिया तथा उन्हीं को सर्वोत्तम कहा है मर्यादा पुरुर्षोत्तम कहा है किसी और को तो ऐसा नहीं कहा गया। आओ देखें कि वे क्या गुण हैं वे क्या विशेषतायें है जिनकी वजह से राम पुरुषोत्तम हो गये राम का मन, राम की आत्मा परमात्माओं की भी परमात्मा हो गयी है ईश्वरों की ईश्वर हो गयी आओ देखें।

1. यह है इनकी शरणागतवत्सलता अब ऐसा क्या खास है इनकी शरणागवत्सलता में जो इतनी प्रसिद्ध हो गयी जबकि शरणागतवत्सलता तो औरों में भी बहुत है। इनकी शरणागतवत्सलता में एक खास बात है वह है ये कहते हैं कि जब कोई भयभीत होकर या प्रेमवश या किसी कामनावश अर्थात किसी भी वजह से मेरी शरण मे आ जाता है तो मैं उसे अपनी शरण मे ले लेता हूँ तथा न

केवल उसके भय को दूर करता हूँ, उसको प्रेम देता हूँ या उसकी कामना की पूर्ति करता हूँ मगर मैं उसके भय को, उनकी कामना को सच्चा, सुन्दर अच्छा एंव सराहनीय बनाता हूँ ताकि हम दोनों का शरण में आने वाले एवं शरण देने वाले दोनों मान बढ़े ना कि मान घटे। अगर उसकी शरण में आने की वजह गलत है तो मैं उसको अच्छा बना देता हूँ, सराहनीय बना देता हूँ तथा तब पूरा करता हूँ मैं अपने शरणागत का सच्चा हित करता हूँ तथा अपने यश की बिल्कुल भी परवाह नहीं करता हूँ मेरे लिए मेरे यश से ज्यादा महत्वपूर्ण है मेरे शरणागत का हित अगर कोई भयभीत है तो मैं उसका आत्वविश्वास एवं आत्मबल बढ़ाता हूँ जिससे वह एक हीरा हो जाता है आत्मनिर्भर हो जाता है तथा अपने भी एवं मेरे भी दोनों के ही काम का हो जाता है यही सच्ची शरणागतवत्सलता है। दूसरी तरफ अगर वह प्रेमवश आया है तो कर्तव्य की तरफ मैं उसका प्रेम जगाता हूँ उसको अपना एवं मेरा सच्चा हितैषी बना देता हूँ। तीसरी तरफ अगर वह मेरी शरण में किसी कामनावश आया है तो मैं उसकी कामना को सत्य की कसौटी पर तोलता हूँ उसके मन में सच्चा विवेक उत्पन्न करवाता हूँ एवं उसकी कामना को सुन्दर सच्चा एवं सराहनीय बनाता हूँ ताकि हम दोनों का मान बढ़े। मैं शरण मे

आऐ हुए को तुरन्त शरण में इसलिए ही ले लेता हूँ कि यह बेचारा है, भटका हुआ है कहीं किसी गलत इन्सान के हाथ में न पड़ जाऐ एवं इसका नुकसान न हो जाए। यही हैं भगवान, सच्चा भगवान भाव कि दूसरे की मदद करना, दुखियारे की मदद करना बिना इस बात को सोचे कि इससे मुझे क्या फायदा। मगर भगवान इतने सुन्दर होते हैं कि इससे फायदा होता ही है मगर भगवान में इससे फायदे की कामना नहीं होती है कर्म, सेवा, दीन दुखियों की मदद निष्काम होती है।

अब यहाँ पर एक और बात है कि राम क्यों हर किसी को अपना लेते हैं अच्छे को भी, बुरे को भी, निर्बल को भी, ताकतवर को भी, अर्थात हर शरणागत को अगर कोई शरण मे आता है तो शरण मे लेते हैं अब देखें राम क्या कहते हैं वे कहते हैं कि सभी जानते हैं कि मैं सत्य का पुजारी हूँ, धर्म का नेता हूँ, अधर्म का नहीं, प्रेम का पुजारी हूँ नफरत का नहीं वह एक अलग बात है कि मेरा प्रेम सौहार्द्रता है प्रेम नहीं क्योंकि सौहार्द्रता तो एक समभाव है एवं प्रेम एक आसक्ति है एवं आसक्ति दुखदायी होती है एवं आपको सीमित बनाती है जबकि सौहार्द्रता आपको दीर्घकालीन प्रेमी, प्रेममय, हितकारी प्रेममय एवं सराहनीय प्रेमी बनाती है।

अब यहां पर मेरा जो मानना है मैं जो समझता हूँ क्योंकि जैसे यह तो सभी जानते हैं कि मैं सिर्फ सत्य, पवित्रता, धर्म, समप्रेम का नेता हूँ तो मेरी शरण में आने का मन सिर्फ उसका करता है जिसका मन अच्छा होता है या जिसके मन में अच्छा होने की कामना होती है एवं अगर किसी में अच्छा होने अच्छा बनने की इच्छा है चाहे वह अच्छा है या नही हैं। अच्छा नहीं है तो बेचारा हो नहीं पा रहा होगा मगर अच्छा होने की इच्छा भावना एवं कामना है यह एक बडी बात है तथा इस तरह वह मेरा शरणनीय है। इस ही वजह से मैं उसे अपनी शरण में ले लेता हूँ तथा अपना फर्ज समझता हूँ उसे अच्छा बनाना तथा चूँकि मेरी सच्ची भावना में मैं दूसरे को भी, शरणागत को भी मान देता हूँ तो धीरे धीरे उसे भी अच्छा बना ही लेता हूँ इस ही वजह से मुझे पुरुषोत्तम कहा जाता है इस ही वजह से मेरा राज्य उत्तम पुरुषों का राज्य हो गया था तथा संसार में रामराज्य इतना यशस्वी, सर्वोत्तम एंव सराहनीय हो गया था।

अब कभी-कभी मेरी शरण मे दुष्ट लोग भी आ जाते हैं या मुझे धोखा देकर मेरे खेमे में व्यवधान एवं विद्रोह उत्पन्न करने की भावना से आ जाते हैं मगर मैं बिल्कुल निशिचिन्तता से उन्हें भी स्वीकार कर लेता हूँ तथा सोचता हूँ कि इन्हें भी आने दो ये आऐंगे गलती

करेंगे दण्ड पाऐंगे फिर ये भी बदल जाऐंगे क्योंकि कि मेरा खेमा धर्म में, सत्य में, इतना ओतप्रोत है कि दुष्टता का यहाँ दम घुट जाता है तथा इसकी संगत का असर दुष्ट पर भी हुए बिना नहीं रहता एवं वह दुष्ट भी अच्छा होने लग जाता है या फिर मृत्यु को प्राप्त होता है।

स्वर्ग, जन्हत, रामराज्य, सतयुग क्या है यह वह जगह, वह काल, वह युग है जहाँ सत्य की स्थापना है धर्म की स्थापना है भगवानी नियम एवं नीतियों का पालन है, राज है अधर्म जहां कोई करता नहीं है, झूठा कोई है नहीं, नफरत या द्वेष भाव कोई रखता नहीं है।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

भगवान को धरती पर कब-कब आना पड़ता है या भगवान कब या क्यों अवतार लेते हैं वे बस जब-जब ध रती पर अधर्म बहुत बढ़ जाता है धर्म की बहुत हानि हो गयी होती है तो अधर्म पर धर्म की विजय के लिए दोबारा से धरती पर धर्म की स्थापना के लिए एवं अध र्म को मिटाने के लिए भगवान अवतार लेते हैं।

धर्म की स्थापना के लिए अधर्म को मिटाना होता है चाहे वह धर्म से मिटे चाहे अधर्म से मिटे कोशिश तो पूरी की जाती है धर्म मार्ग से ही अधर्म मिट जाए तो बहुत अच्छा है मगर अगर अधर्म को मिटाने के लिए

भगवान को अधर्म का रास्ता अपनाना पड़ जाता है तो भी भगवान निन्दनीय नहीं होते हैं भगवान की तो चाहें वह जैसे भी अधर्म को मिटा दें उस ही से तारीफ है अधर्म के मिट जाने से सब बहुत खुश होते हैं एवं अपने भगवान के कृतज्ञ हो जाते हैं अतः कभी-कभी अगर भगवान को अधर्म मिटाने के लिए अधर्म करना पडता है तो भगवान को अधर्मी नहीं कहा जाता है मगर भगवान का धर्म के संस्थापक के रुप में सम्मान किया जाता है।

दूसरी तरफ भगवान तो किसी को भी नफरत की दृष्टि से देखते ही नहीं हैं न तो धर्म को न अधर्म क्योंकि ये तो दोनों ही भगवान के हैं बस भगवान की लीलाऐं हैं। बस जब धर्म बहुत हो जाता है तो नयेपन के लिए अधर्म आता है एवं जब अधर्म बहुत बढ़ जाता है तो भगवान अधर्म का नाश करके धर्म की स्थापना फिर से करते हैं। इस ही प्रकार से वे इस दुनिया को चलाते हैं एवं यही तो भगवान का अपनी इस दुनिया से, चाहे जैसी भी हो उसके प्रति उनका प्रेम है वे सारी बुराईयां अपने ऊपर ले लेते हैं एवं दुनिया का सन्तुलन सही कर देते हैं यही उनका भगवानपन उनका बड़प्पन है।

जब भक्त भगवान को याद करते हैं भगवान के भक्त बहुत परेशान होते हैं तो भगवान अपने भक्तों के

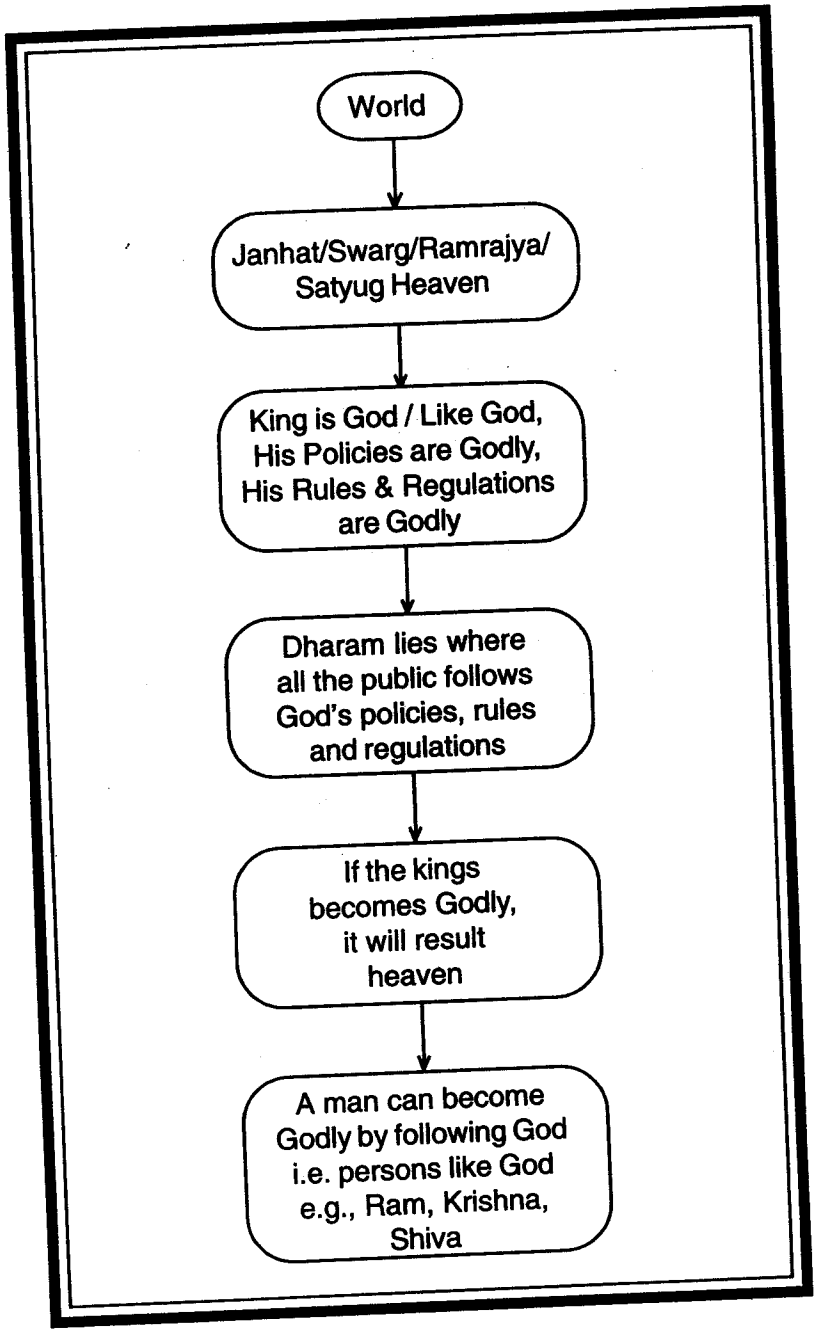
World
Janhat/Swarg/Ramrajya/ Satyug Heaven
King is God / Like God, His Policies are Godly, His Rules & Regulations are Godly
Dharam lies where all the public follows God's policies, rules and regulations
If the kings becomes Godly, it will result heaven
A man can become Godly by following God i.e. persons like God e.g., Ram, Krishna, Shiva

प्रेमवश उनके दुख दूर करने के लिए, भक्तों का विश्वास बचाने के लिए, अपने भक्तों के भले के लिए भगवान अवतार लिया करते हैं एवं अपने भक्तों का मार्गदर्शन करते हैं तथा उन विषम परिस्थितियों में भी जीवन जी कर दिखाते हैं एवं अधर्म मिटाते हैं तथा धर्म में लोगों की आस्था बनवाते हैं।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

'रामराज्य आहवाहन मिशन' जो धरती पर दोबारा से रामराज्य को आमन्त्रित कर रहा है जिसकी नजर में हर इन्सान कहीं न कहीं का राजा है, किसी न किसी गुण का धनी है, एवं हर राजा को राम जैसा होना चाहिए जिससे वह अपने राज्य में रामराज्य कर सके एवं इस प्रकार धरती पर रामराज्य बन जाऐ।

इस सब का यह फायदा है कि जब कोई आदमी राम का भक्त हो जाता है तो उसको श्री राम का भय रहता है एवं वह स्वयं को एक अच्छा इन्सान बनाता है क्योंकि हर राम भक्त जानता है कि श्री राम बहुत सख्त हैं अपनों के लिए भी एवं दूसरों के लिए भी। एक रामभक्त को हमेशा इस बात का डर रहता है कि उससे कोई गलती न हो जाए कि राम जी को गुस्सा आए या कुछ ऐसा काम न हो जाए कि राम जी का नाम बदनाम हो जाए। अतः वह अपनी हर समस्या का अपने हर लालच का सिर्फ ऐसा समाधान निकालता है

कि कोई उस पर उंगली न उठा सके अर्थात उसे श्री राम जी के गुस्से का भोगी न होना पड़े। कहते हैं श्रीराम जी ऐसे हैं कि जहां वो अपने भक्तों का ख्याल रखते हैं अपने भक्तों की खुशियों का ध्यान रखते हैं वहीं एक रामभक्त से कोई भी बदनामी वाला काम बर्दाश्त नहीं करते एवं उनकी सजा भी ऐसी है कि पता नहीं कैसी सजा आकर पड़े एवं उनकी लाठी दिखायी भी नहीं देती है अत अनुशासन में रहना आवश्यक है एक रामभक्त के लिए।

इस प्रकार होता है खेल शुरु आत्मसंयम का, आत्मनियन्त्रण का, आत्मअनुशासन का, आत्मसन्तोष का, आत्मनिर्भरता का, प़रस्पर प्रेम का, परस्पर सहयोग का, आपसी सदभाव का जो एक इंसान को ले जाता है जीवन की ऊँचाईयों के मुकाम पर अर्थात राज्यों को रामराज्य स्वर्ग एवं जन्हत बनाने की तरफ अर्थात एक सुदृढ एवं व अनुशासित समाज। यह सब होता है श्री राम जी कृपा से, श्री राम के भय से, श्री राम के सद्भाव से, श्री राम की अपनो के प्रति पूर्ण सजगता की वजह से, श्री राम का अपनों पर नियंत्रण की वजह से, श्री राम बस दिखायी नहीं देते हैं जैसे मन बस दिखायी नहीं देता मगर करता सब कुछ है जैसे मेरे हाथ पैर मुँह मेरे मन के ही हैं एवं उसके लिए काम करते हैं ठीक इस ही तरह इस दुनिया के सभी हाथ

पैर मुंह दिमाग आदि सब श्रीराम के हैं यह न समझें श्री राम कहां हैं जैसे हम नहीं कह सकते कि मन कहाँ है किसी ने देखा है इस ही तरह हम यह भी नहीं कह सकते कि श्री राम कहां है किसी ने देखे हैं।

अतः निवेदन है कि चुपचाप श्री राम की राजनीति एवं नियमों का पालन करें श्री राम की नीतियों व्यवहारों का सही मतलब समझें जैसे वे सोचते हैं। उस बड़प्पन तक अभी आप लोग सोच भी नहीं सकते हैं उसके लिए आप पर श्री राम की कृपा होना आवश्यक है क्योंकि आप श्री राम को श्री राम की कृपा से अर्थात् जब वे खुद बताते हैं तभी आप उनको समझ पाते हैं उनका करना समझ पाते हैं उनका गुस्सा समझ पाते हैं उनका प्रेम समझ पाते हैं उनकी मर्यादा समझ पाते हैं।

आऐं आगे बढ़ें बजाए बहस करने के हाथ बटाऐं इस धरती को स्वर्ग बनाने में यहां सौहार्द्रता एवं प्रेम बसाने में तथा इसे उन्नति के मार्ग पर ले जाने में।

आगे एक और बात मैं बताना चाहूंगा कि लोग तुलसीदास जी से चिढ़ते हैं महात्मा गाँधी जी से चिढ़ते हैं कि वाह ये तो बस राम-राम रटकर ऐसी ऊचाईयों पर पहुंच गये। ऐसा न समझें स्थिति कुछ और है हकीकत है कि ये लोग राम-राम रटकर सच्चे राम भक्त होकर ऐसे अनुशासित ऐसे सुलझे वे दिमाग के एवं ऐसे समभाव मे

पहुंच गये थे इसलिए ये श्री राम की कृपा से ऐसे मुकाम पर पहुंच गये थे आप ऐसे रामभक्त बनकर देख लो अगर न आप भी ऐसे हो जाओ तो कहना यह बस अनुभव से ही जाना जाता है।

प्रभु राम का स्वामी भाव इतना सुन्दर है कि अगर राम भक्त को कुछ आता नहीं है या अज्ञानतावश उससे कोई भूल हो जाती है तो वे उसको बचा भी लेते हैं उसका ख्याल रखते हैं मगर चाहते हैं कि उनके भक्त से भूल कर भी कोई भूल नहीं होनी चाहिए कोई पाप नहीं होना चाहिए। मगर अगर कोई रामभक्त जानबूझकर श्री राम जी की इस दयालुता का इस कृपालु स्वभाव का नाजायज फायदा उठाता है तो वे अपने भक्त को कोई और दण्ड दे इसकी इन्तजार नहीं करते हैं और खुद ही दण्ड देते हैं तथा कोई यह सोचे कि उन्हें पता नहीं चलता इस भ्रम से तो अपने को बचाना ही सही है क्योंकि वे तो घट-घट वासी हैं वे अपने भक्त द्वारा अच्छा किये जाने पर ध्यान दें या न दें मगर अपने भक्त द्वारा गलत किये गयों का अवश्य ध्यान रखते हैं। ऐसा स्वभाव है श्री राम का ऐसा स्वामित्व है श्री राम का। यही है वजह कि सब उन जैसा स्वामी चाहते हैं इन जैसा सेवक चाहते हैं सभी भगवान भी उन्हें अपना भगवान मानना चाहते हैं।

यही है जिन्होंने भी श्रीराम को समझा या जाना है वे अपने को राम भक्त बनाना चाहते हैं, राम जी को अपना स्वामी बनाना चाहते हैं एवं दुनिया में भी रामराज्य चाहते हैं अर्थात दुनिया में राम जी का ही राज्य हो सबके स्वामी राम जी ही हों क्योंकि सबका भला श्री राम जी की छत्रछाया मे ही आने में है। इस ही में राम जी का भी, रामभक्तों का भी, इन्सानों का भी, भगवानों का भी, सभी का सिर्फ उस ही में भला है यह समझ सिर्फ अनुभव से ही आ पाती है एवं अनुभव श्री राम जी की कृपा से होता है। श्री राम जी की कृपा हमारा उनके प्रति समर्पण करने से होती है क्योंकि फिर उनकी मजबूरी उनकी वचन बद्धता उनका अपने भक्तों पर प्रेम यह सब मजबूरी वश कैसे न कैसे करा ही देता है।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

विद्यार्थियों को राम बनाने का तरीका

हमें अर्थात शिक्षको को स्मार्ट होना पड़ेगा। हमें किसी से अच्छा होने के लिए नहीं कहना है बस ऐसी व्यवस्था बना देनी है कि हर बच्चा हर विद्यार्थी स्वयं ही अच्छा रहने का प्रयास करे। अगर हम किसी से अच्छा बनने के लिए कहते हैं तो यह प्रभावहीन होता है एवं हमको पीठ पीछे हंसी का पात्र एवं पीठ पीछे बुराई का एवं

हमारे सामने दिखावा करने की स्थिति को पैदा करता है इसका तरीका है कि हम स्कोरिंग कुछ इस प्रकार कर दें :–

S.No.	स्वभाव	Nature	Marks
1.	दोस्ताना स्वभाव	Friendly Nature	10
2.	व्यवस्थित पोशाक	Well Dresseness	10
3.	आज्ञाकारिता	Obedience	10
4.	समयपालन	Puncutuality	10
5.	विनम्रता	Politeness	10
6.	पवित्रता	Sacredness	10
7.	केयरिंग नेचर	Caring Nature	10
8.	कर्तव्य कर्मठता	Honouring the duties	10
9.	सकारात्मकता	Positiveness	10
10.	अन्वेषकता	Innovativeness	10
		Total	100

मैं समझता हूँ कि अगर ऐसी व्यवस्था बना दी जाए तो खुद ब खुद ही हर विद्यार्थी स्वयं ही इन गुणों का ध्यान रखेगा तथा इन अच्छे गुणों को अपने मे बढ़ाऐगा एवं एक अच्छे समाज का विकास हो जाएगा।

मैं तो समझता हूँ कि यही सब प्रधान है बाकी सब तो बाद की बात है अर्थात विषय तो बाद की बात हैं सही मायनों में पूरी परीक्षा का आधा भाग इस रुप में मूल्यांकित होना चाहिए बाकी आधा विषयों के लिए होना चाहिए इस ही तरह से बच्चो में रैकिंग (Rankings) डिवीजन (Division) वर्ग (Class) होगा तथा यह स्वतः रुप से उचित समाज बनाने में बड़ा योगदान होगा।

इसके आगे भी मैं कहना चाहूंगा कि इसमें यहां तक कि –ve मार्किंग भी हो सकती है अगर ज्यादा सख्ती बरतनी है अगर इन स्वाभावों के विरोधी स्वभाव पाल रखे हैं तो हम –ve मार्किंग दें उन्हीं से सब समाज के लोग सुरक्षा के दायरे में न्यायिक जाँच के दायरे में सामाजिक प्रशंसा के दायरे में सामाजिक नेतापन के दायरे में पहुंच जाऐंगे।

★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★ ★

जैसा रामायण मे शंकर जी न बताया है तक वितर्क बहस तो बस ठीक एक पेड़ के तने की तरह है यह तो फौरन जहां रोकी जा सके वहीं रोक देनी चाहिए क्योकि यह तो पेड़ की शाखाओं की तरह पता नहीं कैसे शाखाओं की शाखाऐं बढ़ेंगी पता नहीं अतः तुरन्त रोके।

अर्थात जब हमें कोई हमारी कोई गलती बताता है हम तुरन्त लग जाते हैं यह बताने में कि यह गलती मेरी नहीं है कि किसी दूसरे की है एवं तुरन्त इस पर नाराज होकर कहना सुनना शुरु कर देते हैं तथा शुरु हो जाता है कहने सुनने का बुरा जाल।

मगर व्यवहारिक लोग कभी ऐसा नही करते वे चुप हो जाते हैं या चुप रहते हैं इसही वजह से सबके प्रशंसनीय रहते हैं। यहीं पर उचित तो यही है कि हम भी ऐसा ही करें तथा बाद में जिसने वास्तव में गलती की थी उसे प्यार से समझा दें तथा अपने स्वामी को भी बाद में धीरे से यह बात अगर मौका मिले तो बता दें ताकि उसका मन भी साफ हो जाए अर्थात धीमे से एवं बाद में ऐसा करने से आप हमेशा अच्छे कहलाओगे एवं सभी आपको प्यार करेंगे। आपके मन में किसी के प्रति नफरत भी नहीं रहेगी न रखनी चाहिए दूसरे भी खुश होंगे कि बाद मे धीरे से इसने मेरा सही मार्गदर्शन किया बाकी परमात्मा की मर्जी। आप के बस में बस सिर्फ इतना ही है बस इस तक ही सीमित रहें बाकी तो हमारे भोग हैं जो परमात्मा हमें देगा ही देगा चिन्ता न करें।

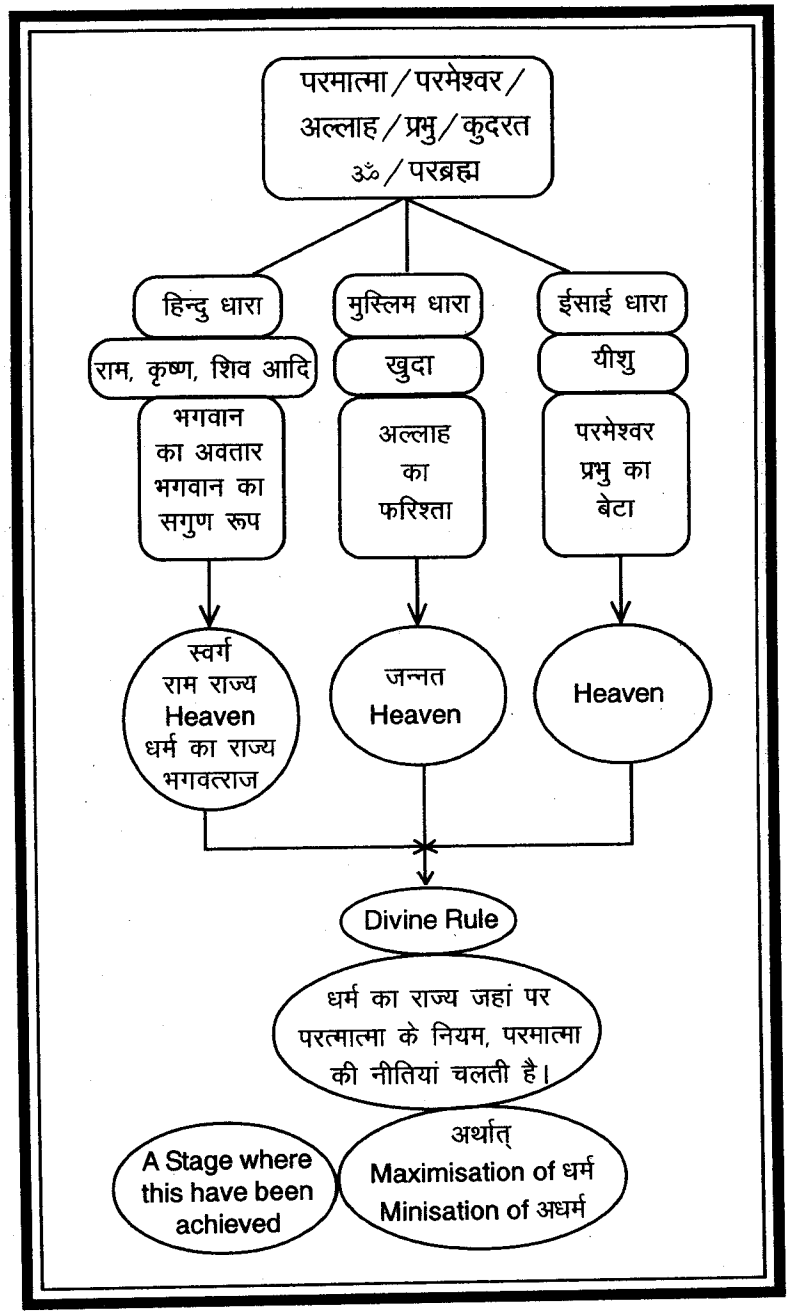
परमात्मा / परमेश्वर / अल्लाह / प्रभु / कुदरत ॐ / परब्रह्म
हिन्दु धारा
राम, कृष्ण, शिव आदि
भगवान का अवतार भगवान का सगुण रूप
मुस्लिम धारा
खुदा
अल्लाह का फरिश्ता
ईसाई धारा
यीशु
परमेश्वर प्रभु का बेटा
स्वर्ग राम राज्य Heaven धर्म का राज्य भगवत्राज
जन्नत Heaven
Heaven
Divine Rule
धर्म का राज्य जहां पर परत्मात्मा के नियम, परमात्मा की नीतियां चलती है।
अर्थात् Maximisation of धर्म Minisation of अधर्म
A Stage where this have been achieved

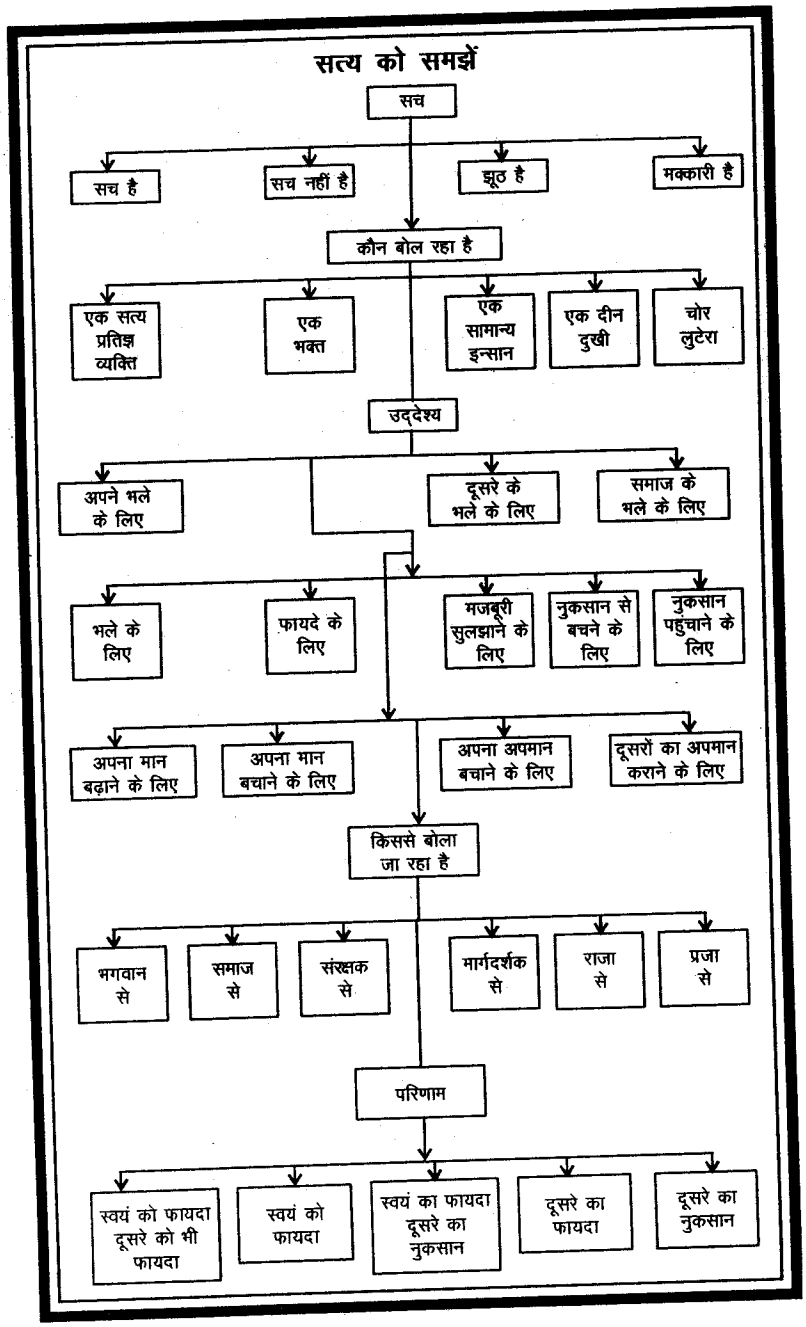
सत्य को समझें
सच
सच है
सच नहीं है
झूठ है
मक्कारी है
कौन बोल रहा है
एक सत्य प्रतिज्ञ व्यक्ति
एक भक्त
एक सामान्य इन्सान
एक दीन दुखी
चोर लुटेरा
उद्देश्य
अपने भले के लिए
दूसरे के भले के लिए
समाज के भले के लिए
भले के लिए
फायदे के लिए
मजबूरी सुलझाने के लिए
नुकसान से बचने के लिए
नुकसान पहुंचाने के लिए
अपना मान बढ़ाने के लिए
अपना मान बचाने के लिए
अपना अपमान बचाने के लिए
दूसरों का अपमान कराने के लिए
किससे बोला जा रहा है
भगवान से
समाज से
संरक्षक से
मार्गदर्शक से
राजा से
प्रजा से
परिणाम
स्वयं को फायदा दूसरे को भी फायदा
स्वयं को फायदा
स्वयं का फायदा दूसरे का नुकसान
दूसरे का फायदा
दूसरे का नुकसान

रामराज्य आह्वान मिशन

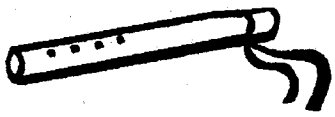

काश! हम सब भी श्रीराम जैसे अच्छे स्वामी, श्रीराम जैसे अच्छे कर्मचारी, श्रीराम जैसे अच्छे मैनेजर, श्रीराम जैसी अच्छी प्रजा होते तो इस दुनिया का तो सुखी होना, आनन्द से भरपूर होना तय था।

"आओ रामपन सीखे एवं राम जैसे हो जाऐं"

www.ramrajyaahwahan.com

हमारे दोस्त बने एवं धरती पर रामराज्य लाने का चैलेंज स्वीकार करें

बस अगर आप हमारे दोस्त बनना चाहते हैं तो आपको किन्हीं 3 घरों/व्यापारों में 'रामराज्य' बनाने का लक्ष्य साधना होगा तथा उसमें हम भी आपका साथ देंगे। इसके लिए आपने निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना है।

- आप बस सिर्फ काम बनाऐं, कभी भी कोई काम बिगाड़ें नहीं, न अपना, न किसी और का।
- आप सिर्फ समझाऐं, सिर्फ समझाऐं मगर जबरदस्ती न करें, दूसरे के समझने का इन्तजार करें सब्र रखें।
- आप सिर्फ प्रेमपूर्ण (सौहार्द्रतापूर्ण) वातावरण बनाऐ, कभी क्लेशपूर्ण नहीं, कभी नहीं।
- आप सभी से करुणापूर्ण, दयापूर्ण, सहयोगी भाव रखें।
- दूसरे ने जो किया, जैसे किया क्यों किया उसकी ऐसा करने की मजबूरी समझें, कभी उससे नफरत या गुस्सा ना करें।
- आप अपने काम बनाते समय ध्यान रखें किसी और का काम न बिगड़ जाऐ, काम सभी के बनने ही चाहिऐं, समन्वय बैठाऐं।
- बस ऐसा करें, एवं करते ही रहें, एक दिन सब अच्छा हो जाएगा, अभ्यास करते रहें, करते रहें, अभ्यास से आप इस कला में पारंगत हो जाऐंगे।

अभ्यास से अर्जुन ने ऐसा तीर चलाना सीख लिया था जिसकी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता, आप भी यह सब सीख जाऐंगे।

यही तो 'राम' हैं, यही तो रामराज्य है।

जय श्रीराम